प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी मंडी : उत्कृष्ट प्रदर्शन का शानदार दशक
विज्ञान, शोध, शिक्षा एवं इनोवेशन में सर्वश्रेष्ठता का लक्ष्य

पूर्व विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों सभी के सहयोग से संस्थान बड़े लक्ष्यों को पूरा करने और देश के विकास में योगदान देने के लिए अग्रसर

- आईआईटी मंडी के गठन से अब तक कुल 85 करोड़ रु. के प्रायोजित रिसर्च प्रोजेक्ट स्वीकृत
- 'इसरो' से लेकर आमेजन और माइक्रोसॉफ्ट तक कई दिग्गज पीएसयू और कम्पनियों ने आईआईटी मंडी के विद्यार्थियों को नियुक्त किया
- अगले दो वर्षों में संस्थान दो नए प्रोग्राम शुरू करेगा : इंजीनियरिंग फिजिक्स में बी.टेक. और बायोइंजीनियरिंग में बी.टेक.

मंडी, 24 फरवरी, 2019 : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी ने रविवार 24 फरवरी 2019 को अपना स्थापना दिवस मनाया। गठन के समय से ही संस्थान ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इनोवेशन, शिक्षा, उद्यम, शोध एवं विकास के कार्यों में तेजी से प्रगति की है। कैम्पस में आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि आईआईटी मंडी में बी.टेक. के पहले बैच (2009–13) के विद्यार्थी (पूर्व) श्री राज कमल सिंह, श्री गौरव यादव, श्री सौरभ जैन, श्री इशांस सिंह और श्री मोहित कुमार मल्होत्रा थे।

इस शानदार अवसर पर संस्थान को संबोधित करते हुए **आईआईटी मंडी के निदेशक प्रो. टिमथी ए. गोन्ज़ाल्विस** ने कहा, ''आईआईटी मंडी आईआईटी सिस्टम का प्रगतिशील सदस्य है। संस्थान के शिक्षकों, विद्यार्थियों और पूर्व विद्यार्थियों ने उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के साथ आईआईटी मंडी का देश–दुनिया में नाम रोशन किया है। आईआईटी मंडी तेजी से उभरते हुए भारत के हिमालय क्षेत्र का आभूषण बन गया है।'' गौरतलब है कि प्रो. गोन्ज़ाल्विस संस्थान के गठन से लेकर अब तक इसके निदेशक हैं और इसके तीव्र विकास में केंद्रीय भूमिका निभाई है।

संस्थान की दूरदृष्टि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा, ज्ञान सृजन और इनोवेशन में अग्रणी भूमिका निभाने की है। आज भारत एक ऐसे समाज निर्माण की दौर में है जिसमें न्याय, सब के समावेश और सतत विकास पर जोर दिया गया है।

आईआईटी मंडी में बी.टेक. के पहले बैच (2009–13) के पूर्व विद्यार्थियों की ओर से श्री राज कमल सिंह ने कहा, ''मुझे और मेरे सहपाठियों को इस विशिष्ट संस्थान का हिस्सा बनने का अवसर मिला और हम सभी को इस पर गर्व है। संस्थान के युवा विद्यार्थियों से मैं यही कहूंगा कि यह हर दिन नए बदलावों का दौर है। आप जो यहां सीख रहे हैं आपको आजीवन लाभ पहुंचाएंगे। मैं आईआईटी मंडी और प्रो. गोन्ज़ाल्विस को धन्यवाद देता हूं क्योंकि उन्होंने हमें वास्तविक जीवन का यह सच्चा ज्ञान दिया। संस्थान से पढ़ाई कर बाहर की दुनिया में कदम रखने के बाद आप जानेंगे कि यह ज्ञान केवल शिक्षा नहीं है बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में काम आता है।''

इस अवसर पर 3 खंडों में प्रकाशित कामंद वैली मोनोग्राफ्स का लोकार्पण किया गया। क्षेत्र की संस्कृति, वन्यजीवन और पारितंत्र पर यह प्रकाशन संस्थान की उल्लेखनीय उपलब्धि है। हाल में गठित संस्थान के अभिलेखागार ने कैम्पस के उत्तरोत्तर विकास की तस्वीरों का एक स्लाइड–शो भी पेश किया।

आईआईटी मंडी के पहले बैच (जुलाई 2009) में 97 विद्यार्थियों के दाखिले के साथ संस्थान ने तेजी से काम किया और 2029 तक बी. टेक., एम. टेक. और एम.एस. और पीएच.डी. के कुल 5,000 विद्यार्थियों के नामांकन का लक्ष्य रखता है। 80,000 वर्गमीटर का निर्माण कार्य पूरा हो गया है और अन्य 1.5 लाख वर्ग मीटर निर्माणाधीन है। आईआईटी मंडी में शोध के लिए 'क्लास 100 क्लीन रूम' जैसी अत्याधुनिक सुविधाएं हैं। यह भारत का पहला और विश्व स्तरीय केंद्र है। इसके अतिरिक्त एडवांस्ड मटीरियल्य रिसर्च सेंटर (एएमआरसी) भी है जिसका निर्माण 50 करोड़ रु. की लागत से किया गया है।

संस्थान ने शोध, औद्योगिक करार, इनोवेशन, उद्यमिता का परिवेश, विद्यार्थियों की गतिविधियां या सामाजिक पहल हर क्षेत्र में एक छोटी अवधि में बड़ी उपलब्धियां हासिल की है। इसका श्रेय संस्थान के समर्पित शिक्षकों, विद्यार्थियों, कार्मिकों, प्रशासन एवं पूर्व विद्यार्थियों समेत अन्य सभी भागीदारों को जाता है।

आईआईटी मंडी को एक अन्य बड़ी प्रतिष्ठा मिली जब तीसरे हिमाचल प्रदेश विज्ञान कांग्रेस के आयोजन के लिए संस्थान को चुना गया। इस अवसर पर वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं ने गांवों में बदलाव लाने वाली तकनीकियों/ उत्पादों के हाल की प्रगति और भावी रुझानों के बारे में चर्चा की। आईआईटी मंडी और हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण परिषद (HIMCOSTE) के इस साझा आयोजन का थीम था 'वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी प्रयास से गांवों का उत्थान'। हिमाचल प्रदेश विज्ञान कांग्रेस में 337 एब्सट्रैक्ट प्राप्त हुए। यह संस्थान के नए सम्मेलन केंद्र का पहला बड़ा आयोजन था। इस केंद्र में 800 लोगों के बैठने के लिए एक सभागार और 88 कमरों का अतिथि गृह है।

आईआईटी मंडी ने जीवन की वास्तविक समस्याओं के समाधान में विद्यार्थियों की दिलचस्पी बढ़ाने के लिए प्रोजेक्ट–प्रधान विशेष पाठ्यक्रमों का विकास किया है। विद्यार्थी और शिक्षक व्यावहारिक उपयोग के लिए प्रोडक्ट और तकनीक के विकास में बहुत दिलचस्पी लेते हैं। इस मकसद से संस्थान की योजना 2019 में प्रोडक्ट डिज़ाइन केंद्र आरंभ करने की है। इसमें विद्यार्थियों के लिए अर्गोनोमिक्स, एस्थेटिक्स और इंजीनियरिंग डिज़ाइन आदि कोर्स होंगे। इससे विद्यार्थियों, शिक्षकों और स्टार्टअप को बेहतर प्रोडक्ट बनाने में मदद मिलेगी।

आईआईटी मंडी ने विभिन्न आईआईटी में छात्राओं के नामांकन को बढ़ावा देने के लिए विशेष अभियान आरंभ किया ताकि विज्ञान के क्षेत्र में अधिक से अधिक महिलाएं काम करें। इस संबंध में प्रो. गोन्ज़ाल्विस के नेतृत्व में गठित समिति ने कई सुझाव दिए।

नए बी.टेक. प्रोग्राम

आईआईटी मंडी की योजना अगले दो वर्षों में दो नए यूजी प्रोग्राम शुरू करने की है : इंजीनियरिंग फिजिक्स में बी. टेक. और बायोइंजीनियरिंग में बी. टेक.। इंजीनियरिंग फिजिक्स में बी. टेक. का उद्देश्य विभिन्न विषयों की परस्पर उपयोगिता को बढ़ावा देना है और यह मौलिक विज्ञान एवं पारंपरिक इंजीनियरिंग के बीच की दूरी मिटाने के लिए सेतु का काम करेगा। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को मौलिक और प्रायोगिक भौतिक विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी जाएगी।

बायोइंजीनियरिंग में बी. टेक. का लक्ष्य विद्यार्थियों को भौतिक, गणित और जैव विज्ञान के क्षेत्र में प्रशिक्षण देना है। साथ ही, प्रौद्योगिकी के विकास के लिए इंजीनियरिंग के सिद्धांतों के बारे में बताना है।

कैम्पस प्लेसमेंट

आईआईटी मंडी ने साल–दर–साल प्लेसमेंट का बेहतर रिकॉर्ड कायम किया है। भारतीय अंतरिक्ष शोध संगठन (इसरो) समेत कई नामी संगठन जैसे गोल्डमैन साक्स ग्रुप, माइक्रोसॉफ्ट, कोड नेशन, ऑप्टम, एसमएस डाटाटेक, सैमसंग, पब्लिसिस सैपियंट, आसानजॉब्स, शॉपएक्स, डोमिनो डाटा लैब, मास्टरकार्ड और लार्सन एण्ड टुब्रो ने संस्थान के विद्यार्थियों की नियुक्ति की है। प्लेसमेंट वर्ष 2018–19 के लिए पहले चरण में ही 78 विद्यार्थियों के प्लेसमेंट हो गए जबकि शैक्षिक सत्र 201–18 के पूरे प्लेसमेंट में यह संख्या 86 थी। इस बार 17 विद्यार्थियों को प्री–प्लेसमेंट ऑफर मिले जो विभिन्न कम्पनियों/ प्रतिष्ठानों में इंटर्नशिप के बेहतर कार्यप्रदर्शन के परिणाम हैं। इस वर्ष (2018–19) इनमें दो इंटरनेशनल पीपीओ भी हैं।

आईआईटी मंडी में हाल के अत्याधुनिक शोध एवं विकास

आईआईटी मंडी में विभिन्न विषयों के परस्पर अध्ययन का बेहतर परिवेश रहा है इसलिए भारत सरकार के जैवतकनीक विभाग ने फार्मर जोन प्रोजेक्ट के लिए इसे चुना है और 7.5 करोड़ रु. के बजट की स्वीकृति दी है। इस बहु–राष्ट्रीय प्रयास का लक्ष्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से फसल प्रबंधन सलाह सेवा देना है जिसका छोटे और मझोले किसानों को बड़ा लाभ होगा। सन् 2018 तक इस प्रोजेक्ट में पंजाब और उत्तर प्रदेश के 1,000 आलू किसानों ने नामांकन करवाए लिए। संस्थान एक अन्य प्रोजेक्ट 'ईमंडी' के तहत मंडी जिले के सभी ऑटो रिक्शों को अलगे कुछ वर्षों में ई–ऑटो बना देने का लक्ष्य रखता है। संस्थान कई प्रमुख निर्माताओं के साथ मिल कर पहाड़ी क्षेत्रों में ई–ऑटो/ ई–रिक्शॉ के कार्य प्रदर्शन का मूल्यांकन कर रहा है। इससे इन वाहनों के लिए जरूरी पावर की रेंज़ बढ़ाने और अन्य जरूरी सुधारों को समझने में मदद मिलेगी।

आईआईटी मंडी में जैवतकनीक के एसिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. रजनीश गिरी और उनकी टीम के शोध से जीका वायरस में पाए जाने वाले इंट्रिसिकली डिज़ॉर्डर प्रोटीन (IDP) या डार्क प्रोटियोम को समझने में मदद मिली है। हाल में उन्होंने एक वायरल प्रोटीन की पहचान की है जिस पर मलेरिया की प्रचलित दवा हाइड्रोक्लोरोक्वीन (HCQ) को असरदार पाया गया। यह निष्कर्ष महत्वपूर्ण है क्योंकि जीका वायरस की दवा के विकास में संभावित दवा और वायरस के लक्षित घटक की प्रतिक्रिया को समझना जरूरी है।

आईआईटी मंडी के मौलिक विज्ञान विभाग में रसायन के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वेंकट कृष्णन के नेतृत्व में एक शोध टीम ने प्रकृति से प्रेरित मटीरियल का विकास किया जो कोहरे से पानी पैदा कर सकता है। शोधकर्ताओं ने ड्रैगन्स लिली हेड (ग्लैडियोलस डेलनी) नामक सजवाटी पौधे के पत्तों की सतही संरचना के आधार पर पानी हार्वेस्ट करने वाली सतह का विकास किया है।

आईआईटी मंडी के एसिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. वरुण दत्त और डॉ. के.वी. उदय और उनकी टीम ने कम लागत से भूस्खलन निगरानी एवं चेतावनी तंत्र का विकास किया है। इससे हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों की एक आम समस्या 'भूस्खलन' से सुरक्षा होगी। मंडी जिला प्रशासन का सहयोग और प्रोत्साहन प्राप्त कर मंडी जिले के भूस्खलन प्रभावित क्षेत्रों में मंडी–जोगिन्दरनगर और मंडी–कुलू हाईवे पर ऐसे 10 सिस्टम लगाए गए। कई अन्य जगहों पर यह सिस्टम लगाने पर विचार किया जा रहा है।

प्रायोजित शोध

2018 में 43 प्रोजेक्ट को स्वीकृति दी गई। इनके लिए 24 करोड़ रु. का प्रावधान किया गया। इसके साथ संस्थान के गठन से अब तक स्वीकृत प्रोजेक्टों के लिए 85 करोड़ रु. से अधिक के प्रावधान किए जा चुके हैं। संस्थान के लक्ष्य :

- ✓ 30 करोड़ रु. के नए प्रायोजित प्रोजेक्ट शुरू करना। इनमें कम से कम 3 करोड़ रु. के प्रोजेक्ट उद्योग जगत से जुड़े हैं।
- ✓ 20 कम्पनियों का इनक्यूबेशन (10 हिमाचल प्रदेश की सेवा में हैं), 5 ने व्यावसायिक परिचालन शुरू कर दिया है।
- ✓ दो पेटेंट के लिए लाइसेंस मिल गया या वे व्यावसायिक उपयोग में हैं।

संस्थान के उल्लेखनीय पूर्व विद्यार्थी

संस्थान के कुछ उल्लेखनीय पूर्व विद्यार्थी हैं : डॉ. मोहित कुमार मल्होत्रा, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार में वैज्ञानिक; श्री धीरेंद्र कुमार सिंह, आईआईटी मंडी के पहले उद्यमी; श्री अथर आमीर खान, भा.प्र.से. 2015 (अखिल भरतीय स्थान : 2); श्री प्रदीप सीरवी, गेट 2015, एआईआर–1; श्री शुभम अजमेरा, गूगल में नियुक्त होने वाले आईआईटी मंडी के पहले विद्यार्थी और श्री आदित्य चौहान जिन्हें 102वें भारतीय विज्ञान कांग्रेस में मटीरियल विज्ञान श्रेणी में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार (2014–15) दिया गया।

संस्थान का इतिहास

24 फरवरी 2009 को कामंद में संस्थान का शिलान्यास किया गया। इसी स्थान पर आईआईटी मंडी का स्थायी परिसर है। जुलाई 2009 में पहले बैच के विद्यार्थियों के दाखिले हुए और 27 जुलाई 2009 से कक्षाएं आरंभ हो गईं। अगस्त 2009 में संस्थान का एक ट्रांजिट कैम्पस मंडी के वल्लभ गवर्नमेंट कॉलेज में बनाया गया। हिमाचल प्रदेश सरकार ने नवंबर 2009 में ट्रांजिट कैम्पस के भवन आईआईटी मंडी को सुपुर्द कर दिया। सितंबर 2012 में पहला बैच कामंद कैम्पस में आ गया। मंडी जिला प्रशासन ने आईआईटी मंडी के विकास में बड़ा योगदान दिया और संस्थान के कई प्रोजेक्ट में यह साझेदार है।

2009 में संस्थान के कार्यारंभ के समय इसमें बी. टेक. के 98 विद्यार्थी थे और 6 एमएस स्कॉलर और पीएच.डी. स्कॉलर थे। मार्च 2011 में संस्थान में 32 शिक्षक थे। 2018 में संस्थान के 1281 विद्यार्थियों ने सफलतापूर्वक पढ़ाई पूरी की। इनमें 627 बी.टेक., 278 पीएच.डी., 49 एम एस, 133 एम.एससी., 177 एम. टेक. और 17 आई–पीएच.डी. रिसर्च स्कॉलर थे। 2018 में संस्थान में 104 शिक्षक और 150 कार्मिक थे।

###

आईआईटी मंडी का परिचय (http://www.iitmandi.ac.in/)

आईआईटी मंडी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा, ज्ञान सृजन एवं इनोवेशन के क्षेत्र में तेजी से उभरता एक प्रमुख संस्थान है। जुलाई 2009 में विद्यार्थियों के पहले बैच से आरंभ कर आज आईआईटी के लिए 1,276 से अधिक विद्यार्थी, 104 फैकल्टी, 150 स्टाफ होना बड़ी उपलब्धि है। इसके विद्यार्थियों में 274 पीएचडी, 46 एमएस और 17 आई–पीएच.डी. रिसर्च स्कॉलर हैं। संस्थान के पूर्व विद्यार्थियों की संख्या बढ़ कर 850 हो गई है।

संस्थान बी.टेक./ एम.टेक./एम.एससी. एवं एम.एस/पीएच.डी. के विद्यार्थियों की संख्या बढ़ा कर 2029 तक 5,000 करने का लक्ष्य रखता है। आईआईटी मंडी एक पूर्ण आवासीय संस्थान है जिसके सभी विद्यार्थियों और 95 प्रतिशत शिक्षकों का कैम्पस के अंदर निवास होगा।

सन् 2010 से अब तक आईआईटी मंडी के शिक्षक 85 करोड़ रु. से अधिक के लगभग 180 प्रोजेक्ट हासिल कर चुके हैं। स्थापना के केवल एक दशक की अवधि में संस्थान के कामंद स्थित कैम्पस में कई लैब और शोध केंद्र स्थापित किए गए हैं। लगभग 50 करोड़ के निवेश से स्थापित एडवांस्ड मटीरियल्स रिसर्च सेंटर (एएमआरसी) में मटीरियल्स के गुणों के वर्गीकरण (कैरेक्टराइजेशन) के लिए आवश्यक आधुनिक उपकरण हैं जिनका लाभ दवा आपूर्ति, विद्युत, इलैक्ट्रॉनिक्स एवं जीव वैज्ञानिक उपयोगों में होगा। सन् 2013 में गठन

के समय से अब तक एएमआरसी ने 200 से अधिक शोध पत्रों के प्रकाशन में योगदान दिया है। आईआईटी मंडी में शोध के लिए 'क्लास 100 क्लीन रूम' जैसी अत्याधुनिक सुविधाएं हैं। यह भारत का पहला और विश्व स्तरीय केंद्र है।

संस्थान में आपस में जुड़े विषयों के अध्ययन–अध्यापन का परिवेश है जो डिज़ाइन–ओरियंटेड है। बी. टेक. के पाठ्यक्रम में पहले साल से चौथे साल तक रीयल–वर्ल्ड टीम प्रोजेक्ट पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। समाज की जरूरतों के मद्देनजर टीम भावना से काम करने पर जोर दिया जाता है। आईआईटी मंडी के पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग मानवीकी है जो इसे समाज के अधिक करीब रखता है। जर्मनी में टीयू 9 के साथ मई 2011 से आईआईटी मंडी के कई सहमति करार पर कार्य जारी हैं। अमेरिका के वॉरसेस्टर पॉलीटेक्निक इंस्टीट्यूट के विद्यार्थी 2013 से हर वर्ष आईआईटी मंडी आते हैं।

सन् 2016 में आरंभ आईआईटी मंडी का कैटलिस्ट हिमाचल प्रदेश का पहला टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्युबेटर है। आईआईटी मंडी की एक अन्य पहल 'इनैबलिंग वीमेन ऑफ कामंद' (ईडब्ल्यूओके) का मकसद महिलाओं को ग्रामीण स्तर के कारोबार शुरू करने के लिए कौशल प्रशिक्षण देना है।

Media contact for IIT Mandi:

IIT Mandi Media Cell - mediacell@iitmandi.ac.in
Akhil Vaidya – Footprint Global Communications
Cell: 9882102818 / Email ID: akhil.vaidya@footprintglobal.com
SamriddhiBhal - Footprint Global Communications
Cell: 7905887524 / Email: samriddhi.bhal@footprintglobal.com
Palak Sakhuja - Footprint Global Communications
Cell: 9582338333 / Email: palak.sakhuja@footprintglobal.com
Shoma Bhardwaj - Footprint Global Communications
Cell: 9899960763/ Email: shoma.bhardwaj@footprintglobal.com
Bhavani Giddu - Footprint Global Communications
Cell: 9999500262 / Email: bhavani.giddu@footprintglobal.com